IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 2, December 2025
Impact Factor: 7.67

प्रेमशंकर रघुवंशी के काव्य में पर्यावरण-चिन्तन

प्रो. (डॉ.) विष्णु कुमार अग्रवाल

प्रोफेसर-हिन्दी विभाग

शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, ग्वालियर

श्रीमती गिरजेश ओझा

शोध छात्रा

जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

शोध सारांश—

प्रेमशंकर रघुवंशी के काव्य में पर्यावरण चिन्तन व्यापक रूप में है जिसमें सतपुड़ा, नर्मदा, विध्यांचल, के नैसर्गिक सौंदर्य को बचाये रखने की विकट विह्वलता देखने को मिलती है। हरसूद में बनाये गये बाँध से विस्थापन की त्रासदी, ग्रामीण जन-जीवन और खेती किसानी के बदलते स्वरूपतथा आदिवासी, गरीब मजदूर, किसानों आदि के दैनिक जीवन की दुरूहता का मार्मिक अंकन है। प्रदूषित होती नदियाँ, वनों की अंधाधुंध कटाई, मृदा प्रदूषण, खत्म होते प्राकृतिक जल श्रोत, तथा विलुप्त होती पशु-पक्षियों एवं जीव-जन्तुओं की दुर्लभ प्रजातियों की गहरी चिन्ता है। वहीं राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर होते युद्ध व युद्धाभ्यास से मानव जीवन क्षुब्द व अशांत है। निरंतर झेलते आघातों से धरती लहूलुहान है और आकाश क्षत-विक्षत। पर्यावरण की दृष्टि से कवि ने इन सभी मूल समस्याओं को अपने काव्य में प्रमुखता से अभिव्यक्त किया है।

मुख्य शब्द—पर्यावरण चिन्तन, प्रेमशंकर रघुवंशी, सतपुड़ा, विंध्याचल, नर्मदा, हरसूद, विस्थापन, रासायनिक हथियार, वैज्ञानिक उपकरण,आदि।

शोध का उद्देश्य—पर्यावरण के महत्व को समझना। पर्यावरण को नष्ट करने वाले घटकों को जानना तथा उसे बचाने के लिए सरकार व अनेक संस्थाओं के साथ-साथ समाज के हर व्यक्ति को अपनी जबावदेही स्वीकार कर उस पर अमल करते हुएहर प्रकार से पर्यावरण को सुरक्षित रखना।

प्रस्तावना—

जनवादी प्रगतिशील चेतना के कवि प्रेमशंकर रघुवंशी के प्रथम काव्य संग्रह **'आकार लेती यात्राएँ'**से लेकर **'नहीं रहने के बाद भी'**काव्य संग्रह में विविध रूपों में पर्यावरण चिन्तन मिलता है। एक श्रेष्ठ कवि की दृष्टि जिस प्रकार दूरदर्शिता के साथ-साथ अन्तरभेदी भी होती है उसी प्रकार प्रेमशंकर रघुवंशी का दृष्टिबोध है जिसमें उनका हृदय सृष्टि के जड़-चेतन के प्रति स्पंदित है। वह अपने समसामयिक परिवेश के प्रति सदैव सजग, तथा कवि रुप में पूर्ण निष्ठावान हैं। कवि ने **'जन जंगल जमीन'**के बद से बत्तर होते हालातों को, जीवन दायिनी निर्मल नदियों की दुर्दशा, बाँध निर्माण से उत्पन्न स्थानीय निवासियों की पीड़ा के साथ-साथ बिगड़ते पारिस्थितिक तंत्र का चिन्तन प्रकट किया है। रघुवंशी जी के काव्य में पर्यावरण चिन्तन हमें पर्वत-पठार, नदी-झरने, वन-उपवन, खेत-खलियान एवं दैनिक जीवन में बढ़ते वैज्ञानिक उपकरणों के प्रयोग से मानव के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों आदि पर केन्द्रित है।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/IJARSCT-30360

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 2, December 2025 Impact Factor: 7.67

"प्रकृति विरोधी आचरण व सौंदर्य की स्वाभाविकता को नष्ट करने वाले तत्वों को बेनकाब करने का उद्यम भी बराबर किया गया है जैसे कि**"नदी चार कविताएँ"**की यह पंक्तियाँ--

"फिर बोली नदी

मैं अब, बारहों महीने बीमार हूँ

मत छुओ, छुओ मत

मेरे गर्भ में

फैक्टरियों का तेजाब पल रहा है"

नदी, पहाड़, जंगल, ही नहीं अब तो हमारा पूरा परिवेश ही जैसे हमसे कहता है कि इस बिगाड़ के जिम्मेदार तुम हो और सिर्फ तुम हो। लेकिन हम सुनते कहाँ हैं इस चीख को . . । सुनने की जरूरत पर ही बल देते हैं रघुवंशी जी। जो दरअसल जीवन की सुरक्षा से जुड़ी बात है . ..प्रकृति की सुरक्षा से जुड़ी बात है।"[1]

व्यापक जन सरोकार की कविताएँ: रजतकृष्ण

प्रेमशंकर के काव्य में पर्यावरण चिन्तन हमें दो रूपों में मिलता है पहला प्रकृतिमय जीवन जीने का आनंद और दूसरा स्वार्थी मानव द्वारा निरंतर प्रकृति को दिये जा रहे घाव प्रति घाव से उत्पन्न कवि की हृदयगत वेदना की अभिव्यक्ति को जानना।

रघुवंशी जी का बचपन ग्रामीण परिवेश में बीता है इसी लिए प्रकृति के जड़-चेतन की अनुभूति उनमें बहुत गहरी है। उनका मानस जहाँ अपनी माटी के कण-कण से हिला मिला है तो वहीं वृक्ष लताओं से गुजरने वाली शीतल सुगंधित वायु ने उनके रोम-रोम को आनंदित किया है। नर्मदा की शीतल लहरों ने उनके हृदय में सुन्दर भावों की हिलोरें भरी हैं। सतपुडा जैसे उनके लिए उनके अस्तित्व की ठोस जमीन के रूप में हो, जिस पर वह कर्म योगी की भाँति तटस्थ दिखाई देते हैं। लेकिन मानव के वेहिसाब विकास ने प्रकृति के अस्तित्व पर ही बड़ा संकट खड़ा कर दिया है जिसके प्रति वह स्वयं जागरूक हैं और सभी को जागरूक करने का अपना भरसक प्रयास करते हैं। इस पर्यावरण में तभी संतुलन संभव है जब प्रकृति अपने मूल रूप में सुरक्षित रह पायेगी। उन्होंने अनेक कविताओं को प्रकृति की आवाज बनाकर लोगों तक पहुँचाने का प्रयास किया है। अपनी कविता **"भूख का नाता"**नामक शीर्षक में पर्यावरण प्रदूषण का सटीक चित्रण प्रस्तुत करते हैं--

"प्रदूषण के करिश्मे दिखाता / जब भी सागर या नदियों को छेड़ता कोई /मैं अंदर तक छटपटा जाता मछली-सा / मेरी भूख के लिये / समाधान जो है जलाशय! ओजोन की पर्तें फाड़ /जब भी मारता कोई आकाश पर झपट्टा / मैं अंदर तक झुलस जाता /आँच खाई फसल-सा / मेरी भूख के लिए भरोसा जो है सूरज!/करता जब भी बादलों के साथ कोई /बारूदी धुएँ की मिलावट /मैं अंदर तक कसकसा उठता निमोनिया-सा/मेरी भूख के लिए /रोटी की महक जो है बादल ! / रौंदता कोई जब पहाड़ की फिजाँ / काटता जंगल/ मैं अंदर तक लहूलुहान हो उठता।"[2]

रघुवंशी जी कविताएँ धरती पर वनों की होती अंधाधुंध कटाई पर जिन्दा लोगों की आँखें खोलती हैं। वन रहेंगे तो नदियाँ जीवित रह पायेंगी और नदियाँ बचेंगीं तो जीवधारी जीवित रह सकेंगे।**'सपनों में सतपुड़ा'**नामक शीर्षक एक कविता वनों की दुर्दशा और उसके लिए उत्तरदायी लोगों के नकाब भी उतारती है—

"मुझको अब भी सपनों में सतपुड़ा बुलाता है।

सघन वनों, शिखरों से ऊँची टेर लगाता है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 2, December 2025 Impact Factor: 7.67

* * *

भूखे मिले पहाड़ी झरने, मन भर आया है

बोले पर्वत और हमारी सूखी काया है

अब तो बनवारी ही वन का तन कटवाता है।"[3]

कवि अपने पर्यावरण के प्रति बहुत ही सजग और संवेदनशील है। दिन प्रति-दिन घटती पशु-पक्षी, एवं जीव जन्तुओं की संख्या तथा विलुप्त होती प्रजातियों पर चिन्तन करते हुए **'कहाँ गए नीलकंठ'**जैसी कविता लिखकर प्रकट की है—

"पहले पहल जब सुनी थी / छत पर किर्र-किर्र आवाज /तब मैं दौड़कर पहुँचा था वहाँ /

जहाँ तुम थे नीलकंठ /..... लेकिन एका एक /कहाँ चले गए तुम।

कहीं कोई बिजली तो नहीं गिरी तुम पर / या कि लंबी उड़ान में तो नहीं फँसे कहीं ...।"[4]

इतना ही नहीं पर्यावरण पर दुष्प्रभाव डालने वाले घटकों में नदियों के अविरल प्रवाह को रोककर उन पर बाँध बनाना और इस निर्माण के कारण पीढ़ियों से रहते आये वहाँ के सैकड़ो गाँवों के रहवासियों की अपने घर-मकान,मंदिर,मस्जिद, खेत-खलियान, ढोर-ढांगर, पालतू पशु-पक्षियों, से आत्मीयता जुड़ी होती है। उनके अपने टूटते बिखरते, रिश्ते-नातों की पीड़ा को सरकारें नहीं समझतीबस मुआवजा का मरहम देकर इतिश्री कर लेती है। विस्थापित होने वाले वे सभी लोग तो मानो जीते जी मर जाते हैं।

दूसरे पहलू को देखें तो वहाँ के जीवधारी, जंगली पशु पक्षियों पर जीवित रहने का संकट आ जाता है। पेड़-पौधे,विभिन्न प्रकार की वनस्पतियाँऔर उपजाऊ भूमि बाँध निर्माण और जल भराव के कारणमृतप्राय हो जाती है। परिणाम स्वरूप बड़े स्तर पर पारिस्थितिक तंत्र बिगड़ता है। इसी विषय पर सभी का ध्यान आकृष्ट करते हुए कवि प्रेमशंकर रघुवंशी ने**'डूबकर डूबा नहीं हरसूद'**नामक शीर्षक से लिखी कविता में मध्य प्रदेश के खंडवा जिले के लगभग 700 साल पुराने शहर जिसे राजा हर्षवर्धन की नगरी भी कहा जाता था **'इंदिरा सागर'**बाँध के बनने के कारण जुलाई 2004 में डूब गया था। परिणाम स्वरूप यहाँ से लगभग ढाई लाख लोगों को विस्थापित होना पड़ा जो एशिया के सबसे बड़े विस्थापन में से एक है। हरसूद की कहानी हमारे सामने आधुनिक विकास के नाम पर हुए विस्थापन और विस्थापितों के कभी न भूलने वाले दर्द का जीता जागता उदाहरण है–

"ढोर-ढांगर

गाड़ी-बैल

छेरा-छेरी

कुत्ता-कुत्ती पिल्लों सहित

बल्कि चिड़ियों चेनुओं के साथ

बढ़ा जा रहा काफिला हमारा

जिनके हरेक जन की कम्मर में

बन्धे जड़े गाँवों के सपने

और ओख भर माटी अपने खेतों की

ताकि जहाँ भी बसें वहाँ ----

बेडूब हरसूद की तरह फैला दें आसपास डटकर

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 2, December 2025 Impact Factor: 7.67

और पल-पल, सांस-सांस, कदम-कदम

करते रहें महसूस यह कि

डूबकर डूबा नहीं हरसूद .....

देख रही सरकार

व्यवस्था कीनजरों से उन सारे दृश्यों को

और घड़ियाली आँसू की स्याही से

पुनर्वास के पट्टों पर

आश्वासन लिखती

छपवाती इसी स्याही से

पुनर्वास के झूठे विज्ञापन ...।"[5]

निष्कर्ष—

आधुनिक समय में देश-दुनिया भर में भौतिक विकास जिस प्रकार हो रहा है उससे सबसे ज्यादा हमारा पर्यावरण क्षत-विक्षत हो रहा है। निरंतर वनों की कटाई, पहाड़ी क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ाने के लिए पेड़ो की कटाई कर रोड व कंकरीट के भवन आदि के निर्माण से पहाड़ों एवं वहाँ के मूल निवासियों का अपना स्वाभाविक जीवन चक्र नष्ट हो रहा है। नदियों की स्वच्छता पर भी विशेष रूप से सरकार के साथ-साथ जन मानस को भी अंधविश्वास छोड़कर वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाकर अपने स्तर पर सहयोग करना होगा। रासायनिक हथियारों के युद्ध व परीक्षण से हमारी धरती दहल रही है और अंतरिक्ष आतंकित है। अतः ग्लोबल वार्मिंग जैसी विकट समस्या वैश्विक स्तर पर लगातर बढ़ रही है जिससे हम सभी प्रभावित हैं। उक्त सभी कारण हमें शीघ्र पर्यावरण निवारण के लिये चेता रहे हैं यदि अब भी नहीं जागे तो हम अपनी आने पीढ़ियों को विरासत के रूप में क्या सौंप पायेंगे ...?

अतः कवि प्रेमशंकर रघुवंशी के काव्य में पर्यावरण चिन्तन व्यापक और अभिव्यक्ति मार्मिक रूप में देखने को मिलती है।

संदर्भ ग्रंथ-सूची—

1. अर्चना भैंसारे, "तुम पूरी पृथ्वी होकविता-विचार, संवेदना और शिल्प" लघु शोध-प्रबंध, बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल, 2006 पृ.सं. 129
2. प्रेमशंकर रघुवंशी, *पकी फसल के बीच*, जयपुर:बोधि प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2000, पृ.32
3. प्रेमशंकर रघुवंशी, *सतपुड़ा के शिखरों से*, वाराणसी:आर्यभाषा संस्थान, प्रथम संस्करण2004,पृ.सं.19
4. प्रेमशंकर रघुवंशी,*नर्मदा की लहरो से*दिल्ली: मेधा बुक्स, 2003, पृ.सं.28,ISBN: 81-8166-009-9
5. प्रेमशंकर रघुवंशी, *डूबकर डूबा नहीं हरसूद*,नयी दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ 2015, पृ. 47